पाठ्यक्रम (माध्यमिक)

मातृभाषा मैथिली

वर्ग : नओ एवं दस

1. प्रस्तावना :

शिक्षामे मातृभाषाक महत्त्व सर्वविदित अछि । छात्रक प्रतिभाक विकास मातृभाषेसँ संभव अछि । ओकरा प्रति नैसर्गिक स्नेह स्वाभाविक अछि । मुदा ताहि लेल बालकमे रुचि जगायब आ रुचिक परिष्कार करब पाठ्यक्रमक सुबोध, सरल ओ सरस होयब आवश्यक अछि जाहिसँ छात्र कें रसबोध ओ सौन्दर्य मे कोनो कठिनाइ नहि हो । ओ सहज रूपेँ विषय-वस्तुकेँ हृदयंगम कऽ सकथि ।

संविधानमे सम्मिलित भेलाक कारणेँ मैथिली शिक्षकक दायित्व बढ़ि गेल अछि । आब मैथिली ज्ञानक संगहि रोजगारक भाषा भऽ गेल अछि । बिहार लोक सेवा, संघ लोक सेवा आयोग आदि विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षामे ऐच्छिक विषयक रूपमे आइ मैथिली शामिल अछि । प्रतिभाशाली छात्रक लेल अवसर बढ़ि गेल अछि । प्राथमिक, मध्य ओ माध्यमिक शिक्षा द्वारा छात्र लोकनिमे एहन भाव-उत्पन्न कयल जाइत अछि जे ओ स्वत: एहि भाषाक उपयुक्त प्रयोग ओ एकर नियमबद्ध प्रकृतिसँ परिचित भऽ जाइत छथि । नवम-दशम वर्ग धरि अबैत-अबैत ओ मध्य किशोरावस्था मे आबि जाइत छथि । हुनकर शारीरिक एवं बौद्धिक दुनू स्तर पर परिवर्त्तन होइत छनि । ओ भावुक बेसी भऽ जाइत छथि । हुनकामे पढ़ब, लिखब आ बाजबक संगहि आलोचनात्मक दृष्टि सेहो विकसित होमय लगैत छनि । विभिन्न साहित्यिक विधाकेँ बुझबाक सामर्थ्य हुनका सभ मे सेहो होमय लगैत छनि ।

तेँ किशोर वय बालककक मनोविज्ञान तथा विभिन्न समस्याकेँ ध्यान मे राखि पाठ्यक्रमक निर्माण आवश्यक अछि । विभिन्न सामाजिक समस्यासँ हिनका लोकनिकेँ अवगत होयब आवश्यक अछि । कतेको प्राचीन वस्तु ओ शब्द लुप्त भऽ रहल अछि । वैश्वीकरणक कारणेँ समस्त भारतीय भाषा पर ग्रहण लागि रहल अछि । सांस्कृतिक चेतना मृत भऽ रहल अछि । प्रेम, त्याग, दया, करुणा, सहानुभूति आदि समस्त मानवीय भावना तिरोहित भऽ रहल अछि । एहना स्थिति मे अस्मिताक रक्षा सेहो एक मुख्य समस्या अछि ।

एहि सभ तथ्यकेँ ध्यान मे राखि माध्यमिक स्तर पर मातृभाषा मैथिलीक अध्ययन साहित्यिक, सांस्कृतिक ओ व्यावहारिक भाषाक रूपमे किछु एहि तरहेँ हो जाहि सँ उच्चतर माध्यमिक स्तर धरि जाइत-जाइत ई छात्रक लेल विमर्शक भाषा बनि सकय । छात्र लाकनि भाषाक लिखित प्रयोगक संगहि सहज ओ स्वाभाविक मौखिक अभिव्यक्तिमे सेहो सक्षम भय सकथि ।

उपभोक्तावादी संस्कृतिक दुष्प्रभावसँ समाजक रक्षाक लेल किशोरावस्थहिँ मे एहेन भाव विद्यार्थीमे उत्पन्न करबाक प्रयास कयल जाय जाहिसँ ओ आगू जाकऽ समाजक एक सभ्य ओ समुन्नत सदस्य भऽ सकथि । समाजकेँ आइ डॉक्टर, इन्जीनियर,प्रोफेसर ओ ऑफिसरक अपेक्षा एक सुसभ्य एवं सुव्यवस्थित व्यक्तिक आवश्यकता अछि । एतदर्थ सम्पूर्ण पाठ्यक्रम उपर्युक्त तथ्यक आलोकमे निर्माणक आवश्यकता अछि ।

2. पृष्ठभूमि :

माध्यमिक कक्षामे (□□□□ धरि) धरिक शैक्षिक प्रयाण शिक्षार्थीक जीवनक ओहन आधारभूत सोपान थक जाहि पर ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व ओ भविष्य अवलम्बित रहैत अछि । एहि अन्तरालमे किशोरावस्थाजनित संवेग, प्राप्त ज्ञान, अनुभव, जीवनक प्रति संवेदनशीलता ओ सौन्दर्य बोध, ओकर भविष्यक असीम सम्भावनासँ सम्बद्ध रहैत अछि । इएह कारणे शैक्षणिक दृष्टि सँ एहि अवधिक उपयोग सतर्कतापूर्वक करबाक प्रयोजन अछि । पाठ्यपुस्तक

Scanned with CamScanner

निर्माणक क्रम पाठ्य सामग्रीक प्रभावोत्पादक, शिक्षाप्रद, आकर्षक ओ रोचक बनयबाक सावधानी राखब आवश्यक । एहि अवधि मे प्रदत मौलिक ज्ञानक प्रभाव बड़ दूरगामी ओ दीर्घकालिक होइत अछि । संगहि एहि वयसक शिक्षार्थीमे स्वयं निर्णय लेबाक सामर्थ्य बड़ कम होइत छैक, तेँ शुद्धता ओ तथ्योन्मुख मनोरंजक सामग्रीसँ मंडित विषयवस्तुक चयन आवश्यक । रोचकताक अभावमे छात्रमे अपेक्षित रुझान नहि भऽ पाओत ।

एकर अतिरिक्त एक तथ्य आओरो ध्यातव्य जे पाठ्य सामग्रीक क्रमानुक्रम शृंखलाबद्ध होयब आवश्यक । कहबाक अभिप्राय जे शिक्षार्थी जेना-जेना अग्रिम वर्गमे उत्क्रमित होइत जयताह हुनका अपन नव वर्गक पाठ्य सामग्रीमे अपन पछिला वर्गक पाठ्पुस्तकसँ उद्भूत ओ सम्बद्ध बुझि पड़नि । दुनू वर्गक पाठ्यपुस्तकमे बेसी अन्तर (□□□) नहि बुझि पड़नि, परञ्च तारतम्यता बनल रहबाक चाही ।

3. पाठ्यक्रमक उद्देश्य ओ विषय-वस्तु

1 मातृभाषाक बोध एवं अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ायब ।

2 स्वतन्त्र चिन्तन एवं आलोचनात्मक प्रतिभाक विकास

3 सांस्कृतिक चेतना, देशभक्तिक भाव ओ प्रकृति प्रति प्रेम जगायब

4 यथासंभव दृश्य-श्रव्य उपकरणक उपयोग कय मातृभाषा शिक्षण केँ प्रभावी बनाओल जायत ।

5 विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षा यथा बिहार लोक सेवा आयोग, संघ लोक सेवा आयोग सदृश परीक्षा हेतु छात्रक मानसिक स्तरक विकास ।

6 मिथिलाक प्राचीन समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा, पर्यावरण, सामाजिक विभिन्न समस्या सँ किशोरवय बालक बालिकाकेँ परिचित करायब

7 भाषिक चेतना जाग्रत करब आ शुद्ध-शुद्ध बाजब ओ लिखबा योग्य बनायब ।

8 शैलीगत एकरूपतासँ परिचित करायब ।

9 कविता, कथा, उपन्यास आदि विभिन्न साहित्यिक विधाक रसास्वादनक क्षमता बढ़ायब ।

10 पाठ्यक्रमक माध्यम सँ छात्र लोकनि में शालीनता शिष्टता ओ नम्रताक भाव जगायब ।

11 सामाजिक विभिन्न समस्यादि सँ छात्रक ध्यान आकृष्ट करब, यथा दहेज प्रथा, भ्रुण-हत्या, छुआछूत, अन्धविश्वास, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद आदि ।

12 मिथिलाक लोकचित्र, लोकगीत, लोकनृत्य, लोकगाथा आदि लोक साहित्यक माध्यमसँ मिथिलाक लोक-जीवन-दर्शन करयबाक प्रयास ।

13 मिथिलाक प्राचीन अपन तिरहुता लिपिक विकास सेहो आवश्यक अछि से किशोरावस्थाहिमे संभव अछि ।

14 मानवाधिकार ओ सूचनाक अधिकारक जानकारी छात्र लोकनि के भेटनि।

4. शिक्षण-युक्ति :

माध्यमिक कक्षामे अध्यापकक भूमिका उचित वातावरणक निर्माणमे सहायक होयबाक चाही । भाषा-साहित्यक अध्यापन मे निम्नलिखित तथ्य पर ध्यान देब आवश्यक अछि-

• विद्यार्थी द्वारा कयल गेल गलतीकेँ स्वाभाविक मानि विकासक अनिवार्य चरणक रूप में स्वीकार कयल जाय जाहिसँ विद्यार्थी बिना कोनो कठिनाइक अनुभव करैत अबाध रूपेँ लिखित ओ मौखिक अभिव्यक्ति करबामे उत्साहक अनुभव करथि ।

Scanned with CamScanner

• भाषाक-शुद्धिक ओ कोनो दबावक अनुभव नहि करथि । हुनका सभकेँ भाषाक रचनात्मक रूपसँ एहि तरहेँ परिचित करायब उचित अछि जे ओ स्वयं सहज रूपेँ भाषाक सृजन कऽ सकथि ।

• ज्ञात सँ अज्ञात दिस लऽ जयबाक प्रयास कयल जाय । जाहिसँ विद्यार्थी स्वतंत्र ओ अबाध रूप सँ लिखित ओ मौखिक अभिव्यक्ति में प्रवीण भय सकथि । अध्यापक केँ सेहो अपन अध्यापन शैली पर निरन्तर चिन्तन करब आवश्यक ।

• एहन शिक्षण-बिन्दु पर ध्यान देल जाय जाहिसँ कक्षा मे छात्रक निरन्तर सक्रिय भागीदारी भऽ सकय आ शिक्षक ओहि मे सहायक भूमिका अदा करथि ।

• प्रत्येक भाषाक अपन प्रकृति नियम आ व्याकरण होइत अछि । भाषाक एहि प्रकृतिक जानकारीक लेल परिवेशगत ओ पाठगत सन्दर्भेक प्रयोग होयबाक चाही । ई सम्पूर्ण प्रक्रिया एहन होयबाक चाही जाहि मे छात्र अपनाकेँ शोधकर्त्ता बुझथि आ शिक्षक मार्गदर्शकक काज करथि ।

• मैथिलीक क्षेत्रीय प्रयोग सँ विद्यार्थी परिचित होथि आ विभिन्न बोलीक महत्त्वकेँ बुझथि । क्षेत्र विशेषक बोलीमे अन्तर स्वाभाविक अछि ।

• विभिन्न शारीरिक रूप सँ अक्षम विद्यार्थीक लेल उपयुक्त शिक्षण सामग्रीक उपयोग कयल जाय आ अन्य विद्यार्थीसँ ओ अपनाकेँ हीन नहि बुझथि एहन प्रयास करबाक चाही ।

• कक्षा में अध्यापककेँ लिंग, जाति, धर्म, वर्ग आदिक प्रति सकारात्मक ओ संवेदनशील वातावरणक निर्माण करबाक चाही ।

• विद्यापति, गोविन्ददास आदि कविक भाषाक मर्म ओ रससँ विद्यार्थीकेँ अवगत करयबाक हेतु संगीतबद्ध प्रस्तुतिक औडियो-वीडियो कैसेट तैयार कयल जाय । जँ आसानीसँ कोओ गायक-गायिका उपलब्ध हो तँ हुनक सहयोग लेल जा सकैत अछि ।

• विद्यार्थी शब्द-कोश, साहित्य-कोश ओ सन्दर्भ ग्रन्थक उचित प्रयोगक ज्ञान करायब शिक्षकक लेल आवश्यक एकर संगहि शिक्षणक नव-नव विधिक प्रयोग सँ छात्रकेँ अवगत करायब आवश्यक ।

5. अंक-विभाजन

समय -3 घंटा **पूर्णांक -100** वर्ग □□□□

1	पाठ्य-पुस्तक:	30
2	पूरक पुस्तक:	10
3	व्यावहारिक व्याकरण:	15
4	निबन्ध	10
5	पत्र-लेखन	07
6	संक्षेपण	08
7	आशय	05
8	तिरहुता लिपि	05
9	मौखिक अभिव्यक्ति	10

Scanned with CamScanner

6. **पाठ्यसामग्रीक चयन हेतु सुझाव :**

माध्यमिक कक्षामे पाठ्यपुस्तकक एक सम्भावित स्वरूप निम्न रूपें अनुशंसित कयल जाइछ :

- पाठ्यक्रमक अनुकूल पाठ्यसामग्री, स्रोत सामग्री आदिक संकलन ।

  एहि निमित्त मिथिला मिहिर, वैदेही, विभूति आदि पूरना पत्रिका तथा समय साल, देशकोश, कर्णामृत, घर-बाहर, अंतिका, मिथिला महान आदि समसामयिक पत्रिका सभक अवलोकन कयल जायत । मैथिली विषयक पोथी सभसँ समन्वित समृद्ध पुस्तकालय सभसँ सम्पर्क ओ संवाद स्थापित कयल जाय ।

- प्रभावोत्पादक चित्रादिक संकलन ओ आवश्यकतानुसार पाठ्य-पुस्तकमे यथास्थान ओकर उपयोगक योजना ।
- दृश्य-श्रव्य संसाधनक वर्गानुकूल संकलन ।
- वर्ग-लिंग-जातिक भावनासँ ऊपर उठि साहित्यकार ओ हुनक रचनाक संकलन कयल जाय ।
- मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा (जेना, लोक-गीत, लोक-नाट्य, लोक-नृत्य, लोक-चित्र आदि सहित) पावनि-तिहार, धार्मिक स्थल, महापुरुष, आदिसँ सम्बन्धित अभिलेख, चित्रादिक संकलन ।
- पाठ्यक्रमक अनुकूल जँ पाठ्य-सामग्री उपलब्ध नहि हो तँ तत्कालहि सक्षम माध्यमे आवश्यकता अनुरूप नवीन ओ मौलिक सृजन करबाओल जाय ।
- मिथिलाञ्चलक प्राकृतिक पर्यावरणमे उपलब्ध संसाधनक समुचित उपयोग पाठ्यपुस्तक मे कयल जायत ।
- ओना तँ चित्रादिक व्यवहारसँ पाठ्य-पुस्तक स्वाभाविक रूपेँ सुसज्जित भऽ जाइछ मुदा माध्यमिक स्तर (कक्षा □□ से □ धरि) क पाठ्य-पुस्तक बहुरंगी ओ आकर्षक रहत तथा विभिन्न विधा द्वारा छात्रक संप्रेषण-क्षमता विकसित करबाक प्रयास कयल जायत ।
- पाठान्तमे विकसित अभ्यासक स्वरूप एहन बनाओल जायत जाहिसँ शिक्षार्थीक बौद्धिक, तार्किक एवं विश्लेषणात्मक क्षमताक विकास होयत । अभ्यासमे एहि प्रकारक प्रश्न/गतिविधि/निर्देशक समावेश रहत जे ओकर परिवेशक संग तादात्म्य स्थापित कऽ सकय ।
- बिहार मे प्रचलित विभिन्न भाषामे परस्पर बौद्धिक ओ संप्रेषणजन्य समन्वय स्थापित करबाक लेल छात्रक वयस ओ वर्गक अनुकूल अन्य भाषासँ अनूदित सामग्रीक उपयोग कयल जायत ।

7. **पाठ्य-पुस्तक :**

1. एहि मे यथानिर्दिष्ट मूल उद्देश्यक अनुरूप 10-10 गोट गद्य-पद्यक पाठ रहत । प्रत्येक प्रत्येक खण्डसँ 5-5 अंकक वस्तुनिष्ठ प्रश्न 2-2 अंकक-लघु उत्तरीय प्रश्न, 5-5 अंकक दीर्घउत्तरीय प्रश्न आ 3-3 अंकक सप्रसंग व्याख्या पूछल जायत । अन्य भाषासँ अनूदित तीनटा कथा 'वाग्विलास खंडक' अन्तर्गत रहत।

2. पूरक पुस्तकमे 7 गोट पाठ रहत जाहिसँ 7 अंककदीर्घ उत्तरीय प्रश्न आ ।-। अंकक तीन गोट वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछल जायत । नवम वर्गक लेल 'मिथिलाक धरोहर' क अन्तर्गत सामा-चकेवा, झिझिया, जट-जटिन आदि पर मनोरंजक पाठ भ' सकैछ आ' दशम वर्गमे मिथिलाक महापुरुषक वर्णन रहि सकैत अछि।

3 व्याकरणक अन्तर्गत

(क) नवम् वर्ग हेतु निम्नांकित अंश पठितव्य अछि । वर्ण ओ ओकर भेद, उच्चारण स्थान, सन्धि, शब्दक भेद उदगम ओ व्युत्पत्तिक विचारसँ संज्ञा, सर्वनाम विशेषण, क्रिया, अव्यय, उपसर्ग, प्रत्यय, कारक, काल, पर्यायवाचीशब्द, विशेष्य-विशेषण, मुहाबरा, लोकोक्ति (कहबी),

Scanned with CamScanner

(ख) दशम वर्ग हेतु -

वाच्य ओ भेद, वाक्य ओ ओकर भेद, वाक्यरचना, समास, लोकोक्ति (कहबी), मुहाबरा, विलोमशब्द, अनेक शब्दक एक शब्द

4 निबन्धक अन्तर्गत कोनो एक विषय पर लगभग 200 शब्दमे निबन्ध-लेखन।

5 पत्र-लेखनक अन्तर्गत औपचारिक अथवा अनौपचारिक पत्र लेखन

6 एक उपयुक्त शीर्षक दय अपठित गद्य खण्डक संक्षेपण

7 कोनो गद्य अथवा पद्यांशक आशय स्पष्ट करब।

8 देवनागरीलिपि में लिखल पाँतीक तिरहुता लिपिमें भाषान्तर।

मौखिक अभिव्यत्तिक अन्तर्गत श्रवण - वर्णित वा पठित सामग्रीकेँ सुनि अर्थ ग्रहण करब, वार्त्तालाप, वादविवाद, भाषण, कविता-पाठ आदिकेँ सुनि बुझब, मूल्यांकन करब ओ अभिव्यक्तिक ढंग केँ जानब। श्रवण शक्तिक क्षमताक विकास।

वाचन - (□) भाषण, वाद-विवाद

(□□) कार्यक्रम प्रस्तुति।

(□□□) वार्त्तालाप ओ ओकर औपचारिकता

(□□) कार्यक्रम प्रस्तुति

(□) कथा-पिहानी अथवा घटनाक वर्णन

(□□) परिचय देब आ लेब।

(□□□) भावानुकूल संवाद वाचन

(□□□□)आशुभाषण

8. अध्यापकसँ अपेक्षा

1 अध्यापक छात्रकेँ क्रियाशील करथि स्वयं सहायकक भूमिकाक निर्वाह करथि।

2 विषयकेँ रोचक ढंगसँ प्रस्तुत करथि जाहि सँ विद्यार्थी कथ्यक प्रति आकर्षित होथि।

3 सहनशीलता, शालीनता, नम्रता एवं सौम्यताक प्रतिमूर्त्ति होयबाक चाही।

4 विषयक पूर्ण ज्ञान एवं उत्तम अभिव्यक्ति क्षमता।

5 सम्पूर्ण पाठ्यक्रमक सफलता अध्यापकक शिक्षण-कौशल पर निर्भर करैछ।

9. स्तरान्त अपेक्षित अधिगम

1 मैथिली भाषामे मौखिक अभिव्यक्ति कऽ सकैत छथि।

2 तिरहुतर लिपिमे उत्तर लिखि सकैत छथि ।

3 मिथिलाक सांस्कृतिक, पौराणिक आ ऐतिहासिक गरिमासँ परिचित।

4 मिथिलाक लोक साहित्यसँ परिचित।

5 भाषाक मानकीकरणक ज्ञान।

Scanned with CamScanner

6 राष्ट्रीय भावनाक विकास ।

7. नियमित डायरी लेखन ।

10. मूल्यांकनः

नवम वर्ग में 30 प्रतिशत आन्तरिक तथा 70 प्रतिशत लिखित परीक्षाक लेल रहत। अन्य मातृभाषाक मूल्यांकन सदृश प्रथम एवं द्वितीय सावधिक परीक्षाक 10-10 प्रतिशत तथा सत्रान्त परीक्षाक 80 प्रतिशत अंकक आधाार पर परिणाम घोषित कएल जाएत ।

11. प्रायोजना कार्य

नवम वर्ग हेतु -

1 विभिन्न कवि ओ प्रमुख गद्यकारक साक्षात्कार

2 विधाक रूपान्तर करबाक प्रयोजना कार्य देल जाय यथा- कथाकेँ एकांकीमे, एकांकीकेँ कथा आदिमे ।

3 बुझौअलि कहबीक संकलन

4 मिथिला चित्र-कला द्वारा मिथिलाक लोक जीवनक चित्रण

5 विभिन्न धार्मिक स्थलक सूची बनायब ।

6 मधुश्रावणी ब्रत-कथा पर आधारित लोक कथाक विवरण प्रस्तुत करब ।

दशम वर्गक हेतु

1 पुरातात्विक स्थलक खोज

2 रेडियो नाटक पर आधारित वृत्त चित्रक निर्माण

3 विभिन्न जातिक संस्कार गीतक संकलन करब आ ओकरा आधार पर ओहि वर्गक सामाजिक स्थितिक मूल्यांकन आधार पर ओहि वर्गक सामाजिक स्थितिक मूल्यांकन करब ।

4 मिथिला विभूति जे आइ धरि अज्ञात छथि, हुनक खोज कय सूचीबद्ध करब ।

5 मिथिलाक लोक-जीवन पर आधारित गीतक विभिन्न प्रकार, नृत्य,गाथा आदिक सूची बनायव ।

6 मिथिलाक प्रमुख पावनि यथा-जूड़शीतल, चौरचन, मातृनवमी, तुषारी, मधुश्रावणी आदिक विशेषताक उल्लेख करब ।

नोटः उपर्युक्त शीर्षकक अतिरिक्त विद्यालयक परिवेशक अनुसारेँ अन्य शीर्षक पर सेहो प्रायोजना कार्य कराओल जा सकैछ ।

Scanned with CamScanner